REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2018

धूमिल और समकालीन कविता

डॉ. सुनील कुमार
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिन्दी–विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय,
अमृतसर (पंजाब)।

प्रस्तावना :

नई कविता के उपरान्त कविता बड़ी तीव्रता से तूफानी दौर से गुजरी। अनेक आन्दोलन कविता के क्षेत्र में हमारे सामने आए यथा– नूतन कविता, समसामयिक कविता, अकविता, अभिनव कविता, सहज कविता, युयुत्सावादी कविता, अस्वीकृत कविता, आदि नाम चाहे जो भी दिया जाए, कविता अपने मूल में तब तक कविता है जब तक वह जीवन और परिवेश को संवेदना के धरातल पर अनुभव करके शिल्पगत सौन्दर्य के साथ अभिव्यक्त करती है। कविता जीवन की व्याख्या है अत : वह जिन्दगी के तमाम 'फलसफे' को अपने भीतर समेटे रहती है।

समकालीन कविता अपने युग एवं परिवेश से सम्पृक्त है। इस कविता में हम अपने वर्तमान को देख सकते हैं। हामरी आशा–निराशा, आकांक्षा–अपेक्षा, राग–विराग, हर्ष–विषाद, सब उसमें समाए हुए हैं। राजनीतिक अव्यवस्था, उत्तरोत्तर कठिन होता जा रहा जीवनयापन, सामाजिक विकृतियां, खोखले सिद्धान्त सबको समकालीन कविता में समेटा गया है। समाकालीन कविता का स्वर व्यंग्य एवं आक्रोश से भरा हुआ है और उसमें बौद्धिकता भी प्रभूत मात्रा में है। समकालीन कविता में चित्रित मानव जिन तनावों, विसंगतियों एवं कुण्ठाओं को लिए हुए जी रहा है, वे पूर्णत : यथार्थ हैं। इस कविता में पहले की कविता की तुलना में सपाटबयानी अधिक है।

समकालीन कविता उस मोहभंग को दर्शाती है जो स्वतन्त्रता के बाद लोगों के हृदय में उत्पन्न हुआ था। आज हमें लगता है कि हम पूरी तरह ठगे हुए हैं। नेताओं के वादे खोखले साबित हुए। सबके घर में रोशनी और खुशहाली का वादा किया गया था, पर यथार्थ में हम पूरे शहर में एक चिराग तक नहीं जला सकें।

अकाल, बेरोजगारी, भूखमरी, जातिवाद, भाषावाद, धार्मिक संकीर्णता और साम्प्रदायिक दंगों ने हमारे आदर्शों की पोल खोल दी। समकालीन कवि इन सब पर अपनी बेबाक टिप्पणी करता है। आज़ादी से उसका मोहभंग हो गया है।

वाद मुक्त, परम्पराओं से रहित, विरोध और विद्रोह की प्रवृत्ति के आवरण में लिप्त सीधे–सपाट बयानबाजी करने वाली समकालीन कविता कथ्य एवं टेकनीक के नवीन धरातल के प्रति प्रतिबद्ध है। इसमें समाज के यथार्थ का व्यापक स्वरूप व्यंजित है। इसका विषय–वस्तु प्रासांगिक और अर्थाभिव्यक्ति बड़ी गूढ़ और प्रभावोत्पादक है। यह अपने युग के अंतर्विरोधों और द्वन्द्वों का प्रारुपण प्रस्तुत करने वाली कविता है जिसका प्रत्येक कवि अद्भुत खीझ, बेचैनी, अकुलाहट एवं अक्रोश भरे स्वरों में जीवन की वास्तविकताओं का कोरा अथवा नग्न चित्र प्रस्तुत करता है और जनवादी कहलाता है। वह किसी विशेष बोध, चेतना, दृष्टि या मर्यादा में बंधा हुआ नहीं है वरन् उसकी कविताओं का केन्द्र बिंदु तो जन–साधारण है। वह जन–साधारण जो खेतों में हल चलाता है, स्टेशनों पर बोझा ढोता है, कहीं रिक्शा चलाता है तो कहीं अमीरों की जूठन खाने को मज़बूर है और इतना सब कर रात को धरती माँ के सीने से सटकर इस प्रकार सो जाता है जैसे सब तरह के डर–भय

भुलाकर बच्चा अपनी माँ से लिपट कर सो जाता है। इस प्रकार कह सकते हैं कि समकालीन कविता अभावी व संघर्षरत जीवन जीने वालों का एक बड़ा कैनवस तैयार करती है और नवीन जीवन–मूल्यों के विस्थापन के ध्येय से उन्हें जागृत भी करती है। समकालीन कविता की यही विशेषता है कि वह किसी भी सामाजिक–राजनीतिक व्यवस्था के विरोध में अगर खड़ी है तो उसे बदल देने के लक्ष्य से, इसलिए इस कविता को विद्रोही या जनचेतना की कविता भी कहा जाता है क्योंकि ''...समकालीन कविता में मनुष्य की प्रतिमा स्थिर, जड़, निष्क्रिय और दार्शनिक नहीं है। उसमें चित्रित आदमी की शक्ल है जिसे आप पहचान सकते हैं, जान भी सकते हैं...।" (हुकुमचन्द राजपाल, समकालीन बोध और धूमिल का काव्य, दिल्ली : कोणार्क प्रकाशन, 1980, पृ॰ 10)

यूँ तो प्रत्येक कवि समकालीन ही होता है जो अपनी सामयिक स्थितियों–परिस्थितियों में से गुजरता हुआ उनसे प्रभावित होकर उन्हें कलमबद्ध करता है लेकिन कुछ ऐसे कवि जो केवल प्रभाव ग्रहण ही नहीं करते अपितु अपनी तूलिका के माध्यम से तत्कालीन परिवेश को प्रभावित कर योग्य दिशा प्रदान कर देने की क्षमता रखते हैं, वास्तव में समकालीन हैं। कविवर धूमिल भी ऐसे ही कवि हैं जिन्होंने व्यक्ति, समाज, राजनीति इत्यादि का निरीक्षण कर उन्हें निजी अनुभव के साथ इस प्रकार उद्घाटित किया कि पूरे व्यवस्था–तंत्र को ही चौकस कर दिया। ऐसा करते हुए उनका घर, गाँव, परिवार इत्यादि कुछ भी अछूता नहीं रहा। समकालीन कविता के चर्चित–परिचर्चित कवियों से उनका नाम सर्वोपरि आता है।

'सुदामा पाण्डेय धूमिल' का जन्म नवम्बर 1936 ई॰ में वाराणसी के 'खेवली' नामक ग्राम में हुआ। ये सामान्य कृषक परिवार से संबंध रखते थे। धूमिल के दो काव्य–संग्रह 'संसद से सड़क तक' और 'कल सुनना मुझे' सर्वमान्य हैं। 'कल सुनना मुझे' का प्रकाशन 1977 ई॰ में हुआ। धूमिल ऐसा अनुपम कवि था युगीन परिस्थितियाँ जिसके पैरों में बेड़ियाँ बनकर उसे जकड़े हुए थी लेकिन वह कहीं भी उनसे (परिस्थितियों से) समझौता करने को तैयार नहीं था इसलिए उसके जीवन में व्याप्त कसक, संत्रास, आक्रोश व घुटन उसकी कविताओं में संघर्षरत चेतना को लेकर उभरी। यद्यपि "धूमिल को समकालीन कवियों में शब्दों का जादूगर मानते हैं।" (हुकुमचन्द राजपाल, समकालीन बोध और धूमिल का काव्य, दिल्ली : कोणार्क प्रकाशन, 1980, पृ॰ 10) तथापि वह केवल शब्दों के आक्रमण से या कल्पित खोखलेपन से बुतपरस्ती करने वाला कवि नहीं था। उसकी सर्जना का स्तर जीवन तुल्य वह वैष्मय और विद्रूपता थी जिसे हवा देती है हमारी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व सांस्कृतिक व्यवस्था और इसी व्यवस्था का विरोध वह अपनी कविताओं बड़ी बेबाकता से करते हैं जिसमें न कोई मूल्य चेतना है और न ही मानवतावाद।

समकालीन कविता अपने युग, अपने समय से पूरी तरह सम्पृक्त है। 'धूमिल' व्यवस्था में जीने वाले आदमियों तथा उस व्यवस्था पर पलने वाले शोषकों–तीनों को अपनी कविता में समेटते हैं :

"एक आदमी रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है
न रोटी खाता है
वह सिर्फ रोटी से खेलता है
मैं पूछता हूं यह तीसरा आदमी कौन है
मेरे देश की संसद मौन है।"

समकालीन कवियों ने सवार्थलोलुप कुर्सी प्रेमी नेताओं पर बेबाक टिप्पणियां की है। ये नेता जनता को खिलौना समझते हैं और अपना उल्लू सीधा करने के लिए हमारा उपयोग करते रहते हैं।

समकालीन कविता में जीवन की निर्मम वास्तविकताओं का यथार्थ चित्रण हुआ है। यह जीवन की भयावह त्रासदी, क्रूरता और विसंगतिपूर्ण स्थितियों को सामने लाती है। इस कविता को लिखने वाला कवि समकालीन राजनीति, समकालीन समाज व्यवस्था एवं समकालीन समस्याओं के प्रति पूरी तरह जागरूक होता है। वह इन समस्याओं को अनदेखा नहीं कर सकता अपितु कविता में इनकी अभिव्यक्ति करता है। इस कविता में व्यक्तिगत पीड़ा के साथ–साथ व्यवस्था के प्रति मोहभंग एवं आक्रोश की अभिव्यक्ति करता है। जो कुछ सामने हो रहा है उसे रचनात्मक स्तर पर इस कविता में अभिव्यक्ति मिली है। बेरोजगारी, भूखमरी,

अवसरवादिता, राजनीतिक स्वार्थपरता, जातिवाद एवं धर्मान्धता, झूठे आश्वासन, भ्रष्ट प्रशासन एवं राजनीतिक जड़ता ने अधिकांश लोगों का मोहभंग कर दिया। धूमिल कहते हैं :

"मैने इंतजार किया
अब कोई बच्चा भूखा रहकर
स्कूल नहीं जायेगा
अब कोई छत
बारिश में नहीं टपकेगी"

पर ये आकांक्षाएं पूरी नहीं हो सकी।

सहज सरल भाषा में की गई इन अभिव्यक्तियों से पाठक तिलमिला उठता है।

समकालीन कविता अपने देशकाल से पूरी तरह जुड़ी हुई है। चारों ओर फैली भयावह स्थितियों, भूखी नंगी जनता की परेशानियों एवं शासक की लापरवाही सब कुछ वह अपने काव्य में समेटता है।

समकालीन कविता का क्षेत्र हमारे आस पास का परिवेश है। आज की कविता सहज धारदार एवं प्रभावशाली है और वह आम आदमी की भाषा में कही गई है। इसकी शैली प्रहारक है, व्यंग्यात्मक है और साथ ही साथ सार्थक भी है। समकालीन कविता में जो काल संसक्ति है उसका अभिप्राय है–समय को गति के साथ यथासम्भव चलना। इस कविता ने यही किया है स्वयं को समय के साथ बदला है। आज के कवि आम आदमी के परिवेश एवं मानसिकता को कविता में अभिव्यक्त कर रहे हैं। इन कवियों में प्रमुख हैं–धूमिल, दुष्यन्त, रघुबीर सहाय कुंवर नारायण, लीलाधर जगूड़ी, चन्द्रकान्त देवताले, बलदेव वंशी, श्याम विमल, बेणुगोपाल आदि। ये कवि समय के प्रवाह को पकड़े का प्रयास करते हुए आम आदमी की स्थितियों एवं परिस्थितियों को अपनी कविता में बखूबी अभिव्यक्त करने में सफल हुए हैं।

समकालीन कविता की एक प्रमुख विशेषता है लोक जीवन से उसका जुड़ाव, इसी को आलोचकों ने लोक संसक्ति कहा है। प्रयोगवाद लोक जीवन से कट गया था, किन्तु समकालीन नई कविता ने लोक जीवन को अनुभूति, सौन्दर्य बोध–दोनों स्तरों पर ग्रहण किया है। उसमें लोक जीवन के बिम्ब, उपमान, प्रतीक एवं भाषा प्रयुक्त है। आज की कविता बिम्ब बहुल है और आज के कवि बिम्बों को लोक जीवन से चुनते हैं। इस कविता में व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों प्रकार के बिम्ब हैं। साथ ही ये बिम्ब इतिहास पुराण से भी चुने गए हैं।

समकालीन कविता में ग्रामीण एवं कस्बाई मूल्यों का विघटन साथ–साथ नगरीय जीवन भी अभिव्यक्त हुआ है। वस्तुत : यह कविता जीवन के यथार्थ से जुड़ने का प्रयास करती है। उसमें मानव की उत्तेजना, खीझ, आक्रोश, निराशा, कुण्ठा, असन्तोष सब कुछ देखा जा सकता है। पुराने मूल्य आज टूट रहे हैं और नए मूल्य स्थापित हो रहे हैं। समकालीन कविता में इस मूल्य विघटन को हर स्तर पर अनुभूति का विषय बनाया गया है।

समकालीन कवि लोक में व्याप्त असंतोष, कुण्ठा, नफरत और विद्रोह की आग को अपनी कविताओं में अभिव्यक्ति देता है। 'धूमिल' की निम्न पंक्तियां इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं :

"मैं देखता रहा
हर तरफ ऊब थी
संशय था
नफरत थी।
मगर हर आदमी अपनी
जरूरतों के आगे असहाय था।
उसमें सारी चीज़ों को
नस सिरे से बदलने की
बेचैनी थी, रोष था।"

समकालीन कवि लोक में व्याप्त निर्मम वास्तविकताओं से आंखें नहीं चुराता उन्हें जीवन्तता के साथ अभिव्यक्त करता है। राजनीतिक परिदृश्य में आई गिरावट को समकालीन कवियों ने तीव्रता के साथ अनुभव किया है। आज कोई भी नेता दूसरे को पनपने नहीं देना चाहता।

समकालीन कविता में लोक संसक्ति भाषा के स्तर पर भी दिखाई देती है छायावादी काव्य की शब्दावली संस्कृतनिष्ठ थी, प्रगतिवाद कविता लोक जीवन से जुड़ी हुई जबकि प्रयोगवादी कवियों की भाषा रोमानी आधार ग्रहण किए हुए थी। समकालीन कविता में लोक शब्दों को चुना गया है।

धूमिल समय के अनुसार नहीं, बल्कि समय की माँग के अनुसार चलने वाले रचनाकार हैं। वे सन् साठ के बाद के कवि हैं, जो 'शब्दों को खोलकर रखते हैं। जबकि छायावादी शब्दों को तौलकर, प्रयोगवादी शब्दों को टटोलकर और नई कवितावादी शब्दों को गोलकर रखने के आग्रही रहे हैं।

कविता के शिल्प और कथ्य के संदर्भ में धूमिल का एक बड़ा ही व्यंग्यात्मक वक्तव्य है–''ऐसा क्यों है कि ज्यादातर लोग कविता से नहीं कविता के शिल्प से ऊब जाते हैं और सवाल जब समूची कविता को बदलने का है, वे महज शिल्प बदल देते हैं, गोया नींद में करवट बदल ली।'' तात्पर्य यह कि धूमिल कविता के शिल्प पर कम, कथ्य पर ज्यादा बल देते के हिमायती रहे हैं। जबकि कविता में बदलाव का अर्थ प्रायः लोग 'टेकनिक से ही लेते हैं और जैसा कि धूमिल का आरोप है, वैसा करते भी हैं।'

कविता में जाने से पहले धूमिल एक बड़ा ही सीधा सवाल पूछते हैं–

''जब इससे न चोली बन सकती है
न चोंगा, तब आपै कहो–
इस ससुरी कविता को
जंगल से जनता तक
ढोने से क्या होगा?''

ऊपर की पंक्तियों से यह साफ जाहिर होता है कि धूमिल 'कला कला के लिए' सिद्धांत के पक्षधर न होकर 'कला जवन के लिए' के पक्षधर थे। मात्र शिल्पगत चत्कार और बौद्धिक विलास के द्वारा कविता को वे विश्वविद्यालयीय कक्षाओं और साहित्यिक संगोष्ठियों तक सीमित रखना नहीं चाहते थे बल्कि उन लोगों के बीच तक उसे ले जाना चाहते थे, जिनके लिए वे लिख रहे थे। क्योंकि 'मोचीराम' की चर्चा हम संगोष्ठियों में चाहे जितनी कर लें, मोचीराम उसमें शामिल नहीं हा पाता है और यह काम तब संभव है जब शिल्प की पेचीदगियों से कविता को उबारा जाए, उससे अलग रखा जाए। धूमिल ने ऐसा करने का भरसक प्रयास किया है। इसीलिए धूमिल कविता के शिल्प के प्रति ज्यादा सजग नहीं रहे, उसके कथ्य के प्रति जागरूक रहे और कथ्य में भी सरलता के आग्रही रहे।

फिर भी कविता कविता, वह सर्वथा शिल्पहीन हो नहीं सकती। सामान्य कथन से काव्य कथन इसी अर्थ में भिन्न है, जिसके कारण उसमें एक विशेष प्रकार की भंगिमा आती है, जिसका प्रभाव मन–प्राण पर गहरा पड़ता है जो हमें दूर तक और देर तक प्रभावित और दांदोलित करता है, जाग्रत और क्रियाशील होने में मदद करता है।

धूमिल के काव्य में शिल्प सहज भाव से विन्यस्त लगते हैं। ऐसा बहुत कम लगता है कि धूमिल सायास कुछ कह रहे हैं, गढ़ रहे हैं। फिर भी धूमिल का काव्य–सौंदर्य हमें सहज ढंग से अपनी ओर खींचता है, जिनमें बिंब, प्रतीक, शब्द सामर्थ्य, ध्वनि, अलंकार, तुक, नाटकीयता, प्रवाह और भाषा आदि प्रमुख हैं जो उनके काव्य के कथ्य को प्रभावक बनाते हैं।

धूमिल की कविताओं में अनेक प्रकार के बिंबों का ऐसा संवरा रूप गढ़ा गया है कि उससे कविताओं के कथ्य मूर्तिमान होते हैं।

कविवर धूमिल की कविताओं का अध्ययन कर निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि जिस आत्मीयता से इन्होंने जन–पीड़ा को व्यक्त किया है, जिस निर्भयता व सपाटबाजी से ये राजतंत्र के विरुद्ध खड़े हुए हैं और जिस व्यंग्य चेतना से इन्होंने यथार्थ के मुँह पर से मखौटा उतारा है, इन्हें एक सच्चे जनकवि की ख्याति से अभिभूत करता है। सही अर्थों में यह व्यवस्था का विरोधी कवि है। इसकी संवेदना सामाजिक–राजनीतिक समस्याओं के धरातल पर अंकुरित होकर आम आदमी के संघर्षरत जीवन और संपूर्ण व्यवस्था–तंत्र के समक्ष

निजी जीवनानुभवों से पुष्पित होकर सर्जना के उस व्यापक स्तर पर फलीभूत होती है जहाँ से इनकी समकालीनता का सच्चा और व्यापक स्वरूप प्रदर्शित होता है। इन्होंने आम आदमी को उसके अस्तित्व के दर्शन करवाये हैं जिससे वह जीने की चाह लेकर फिर से उठ खड़ा हुआ है। मंजु अग्रवाल के कथनानुसार भी– ''धूमिल के काव्य में प्राप्त होने वाला यह अस्तित्व दर्शन आज के आम आदमी की छवि को हमारे समक्ष रखता है। कवि आम आदमी के मिथक को जीवंत बनाने के लिये प्रयत्नशील है।" (मंजु अग्रवाल, धूमिल : काव्य–यात्रा, कानपुर : ग्रन्थम, 1980, पृ॰ 50–51) अतएव कह सकते हैं कविवर धूमिल समकालीन हिन्दी कविता के चर्चित कवि हैं।

धूमिल, कुंवर नारायण, श्याम विमल, दुष्यन्त कुमार, ऋतुराज, मलयज, प्रयाग शुक्ल, बलदेव वंशी, लीलाधर जगूड़ी, आदि अनेक समकालीन कवियों की कविताएं लोक जीवन के अनेक तत्वों का समावेश अपने भीतर समेटे हुए हैं अतः यह कहना समीचीन है कि समकालीन कविता में लोक संसक्ति है और धूमिल सच्चे अर्थों में समकालीन कविता के प्रतिनिधि कवि हैं।

डॉ. सुनील कुमार
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिन्दी–विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर (पंजाब)।